शिवकुमार श्रीवास्तव

शब्द और कर्म की सार्थकता

सं० कान्तिकुमार

Scanned with OKEN Scanner

ISBN 81–86295–21–6

प्रकाशक □ साहित्यवाणी
30, पुराना अल्लापुर
इलाहाबाद–211006

कॉपीराइट □ डॉ० कान्ति कुमार

संस्करण □ प्रथम, 1999

मूल्य □ तीन सौ पचीस रुपये मात्र

आवरण □ कोलोरेड, इलाहाबाद

लेज़र कम्पोजिंग □ प्रयागराज कम्प्यूटर्स
13, मोतीलाल नेहरू रोड
इलाहाबाद

मुद्रक □ श्री मारुती प्रिंटर्स
56/13, मोतीलाल नेहरू रोड
इलाहाबाद – 211 002

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

खण्ड एक : व्यक्ति, शब्द और कर्म 15-107

एक : प्यारे भाई और भाई साहब के बीच : प्रो० कान्तिकुमार 17

दो : मिट्टी और पानी को छूकर बहता हुआ समीरण : प्रो० कान्तिकुमार 56

तीन : चन्द सतरें और : प्रो० कान्तिकुमार 92

खण्ड दो : साथ चलते हुए 109-167

एक बेधड़क आदमी : मायाराम सुरजन 111

जो 'भाई साहब' कहलाते हैं : हरिशंकर परसाई 113

सदैव कर्मठ और जाग्रत : प्रो० चन्द्रशेखर अवस्थी 115

शिवत्व के साधक : बाल कवि बैरागी 120

एक बहुआयामी प्रतिभा के धनी–भाई शिवकुमार श्रीवास्तव : इकराम सागरी 123

'अल्हड़' होने का अर्थ : राजेन्द्र अनुरागी 126

आदमी और इंसान : नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी 129

बुद्धिनिष्ठ और आशावादी : प्रो० रमेशचन्द्र दुबे 132

सच्चा जाग्रत नेतृत्व : प्रो० कमलाप्रसाद 136

ये हैं हमारे शिवकुमार जी : डॉ० रघुवीर सिन्हा 140

लीक से अलग हटकर : प्रो० दिनकर सोनवलकर 149

मशाल की तरह जलता व्यक्तित्व : सत्यमोहन वर्मा 152

सृजनात्मकता के पर्याय : प्रो० कृष्ण कमलेश 156

भाई साहब तुम : मायूस सागरी 159

गीतों की गंगा के शिव तुम : डॉ० श्याम मनोहर सीरोठिया 166

Scanned with OKEN Scanner

खण्ड तीन : शिवकुमार की कविता 169-281

नैसर्गिक प्रतिभा के यशस्वी कवि : आचार्य भगीरथ मिश्र 171

संवेदना और संवेदना का शास्त्र : आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी 178

काव्य विकास के विभिन्न पड़ाव और आम जनता का प्रमाणपत्र : महेन्द्र फुसकेले 184

कवि शिवकुमार श्रीवास्तव की विरासत : डॉ० रमेशदत्त मिश्र 196

तुम ऋचा हो : रूमानी अवसादों से लड़ती कविताएं : प्रो० प्रेमशंकर 204

नयी कविता की ताजगी और गीत की लयात्मकता : देवराज 'दिनेश' 207

साहित्यिक और सामाजिक दायित्वों का एक साथ निर्वाह : डॉ० ओम प्रभाकर 210

अमरबेल तथा कुर्सी दौड़ के विरुद्ध : डॉ० वीरेन्द्र मोहन 212

शहर सहमा हुआ : एक प्रगतिशील क्रान्तिकारी स्वर : डॉ० लक्ष्मीनारायण सिलाकारी 221

समय कागज पर—सार्थक संवाद की कविताएँ : आचार्य राममूर्त्ति त्रिपाठी 228

अमानवीकरण से संघर्ष : प्रो० प्रेमशंकर 231

समय से संवाद स्थापित करती हुई कविताएँ : डॉ० नरेन्द्रसिंह 234

अल्पना रचाना—कविता लिखना जरूरी है और जेल जाना भी : प्रो० कान्तिकुमार 240

गीत और कविता के सम्मिश्रित संस्कार : डॉ० सुरेश गौतम 242

अरे! यार सूरज : इंसानी दुःख—दर्द का यथार्थ दस्तावेज : डॉ० हौंसिला प्रसाद सिंह 245

स्नेह अग्निगर्भा है : डॉ० संतोषकुमार तिवारी 259

परिप्रेक्ष्य व्यक्ति चेतना का : डॉ० रमेशदत्त मिश्र 262

पसीने के छंदों का लोकगंधी स्वर—'जीवन गीत' : डॉ० प्रेमशंकर रघुवंशी 266

यह सुगंध मयूरी है : डॉ० संतोषकुमार तिवारी 276

जमीन की कथाएँ : केशव रावत 280

खण्ड चार : कथा साहित्य : कठपुतलियों का दौर 283-334

अदम्य मानवतावादी मूल्यबोध का उपन्यास : रामेश्वर शुक्ल 'अचंल' 285

सत्य के बल पर उपलब्ध कलात्मकता : डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय 286

समाज पर हावी होती हुई राजनीति : प्रो० हनुमानप्रसाद वर्मा 288

Scanned with OKEN Scanner

अभी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ है : प्रो० कान्तिकुमार 294
आसपास के चरित्रों का औपन्यासिक रूपान्तरण : प्रो० लक्ष्मीनारायण दुबे 298
सवाल उस अदृश्य हाथ का जो दिल्ली से कठपुतली नचाता है
: महेन्द्र कुमार फुसकेले 301
कठपुतलियों के दौर में आदमी की अहमियत : डॉ० श्रीमती साधना जैन 310
समकालीन राजनीति का खुला दस्तावेज : डॉ० रमेशदत्त मिश्र 315
राजनीतिक कुचक्रों की इतिहास गाथा : डॉ० सुरेश आचार्य 319
यथार्थ से सीधी मुठभेड़ : डॉ० सेवाराम त्रिपाठी 325
राजनीतिक अराजकता का दस्तावेज़ : डॉ० शहज़ाद कुरैशी 332

खण्ड पाँच : शब्द से हटकर 335-374

कला साधना का तीसरा आयाम–केशव रावत 337
शब्दों को पिरोने के अलावा भी–शेख मुहम्मद आरिफ 241
शब्दों से रेखाओं-रंगों तक : सर्जनात्मक बेचैनी का प्रमाण–कुसुम सुरभि 344
शिवकुमार जी के चित्र : रंगों में बोलती भाषा–रमेशदत्त दुबे 348
वस्तु को चित्रित करने वाली सही आँख–डॉ० विजय बहादुर सिंह 351
अन्यथाकरण और लोकमंगल के चित्र–डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी 354
रंग-रेखाओं की भाषा–डॉ० प्रेमशंकर 357
अन्वय–डॉ० गोविन्द द्विवेदी 361
जिजीविषा का वैभव–डॉ० मनोहर देवलिया 363
चित्रकला और काव्य के अंतर-संबंध के परिप्रेक्ष्य में
शिवकुमार श्रीवास्तव की चित्रकला–शरद सिंह 366
वाल्मीकि के शाप को रंगों और रेखाओं में बाँधते हुए–डॉ० कान्ति कुमार 370

□□□

Scanned with OKEN Scanner

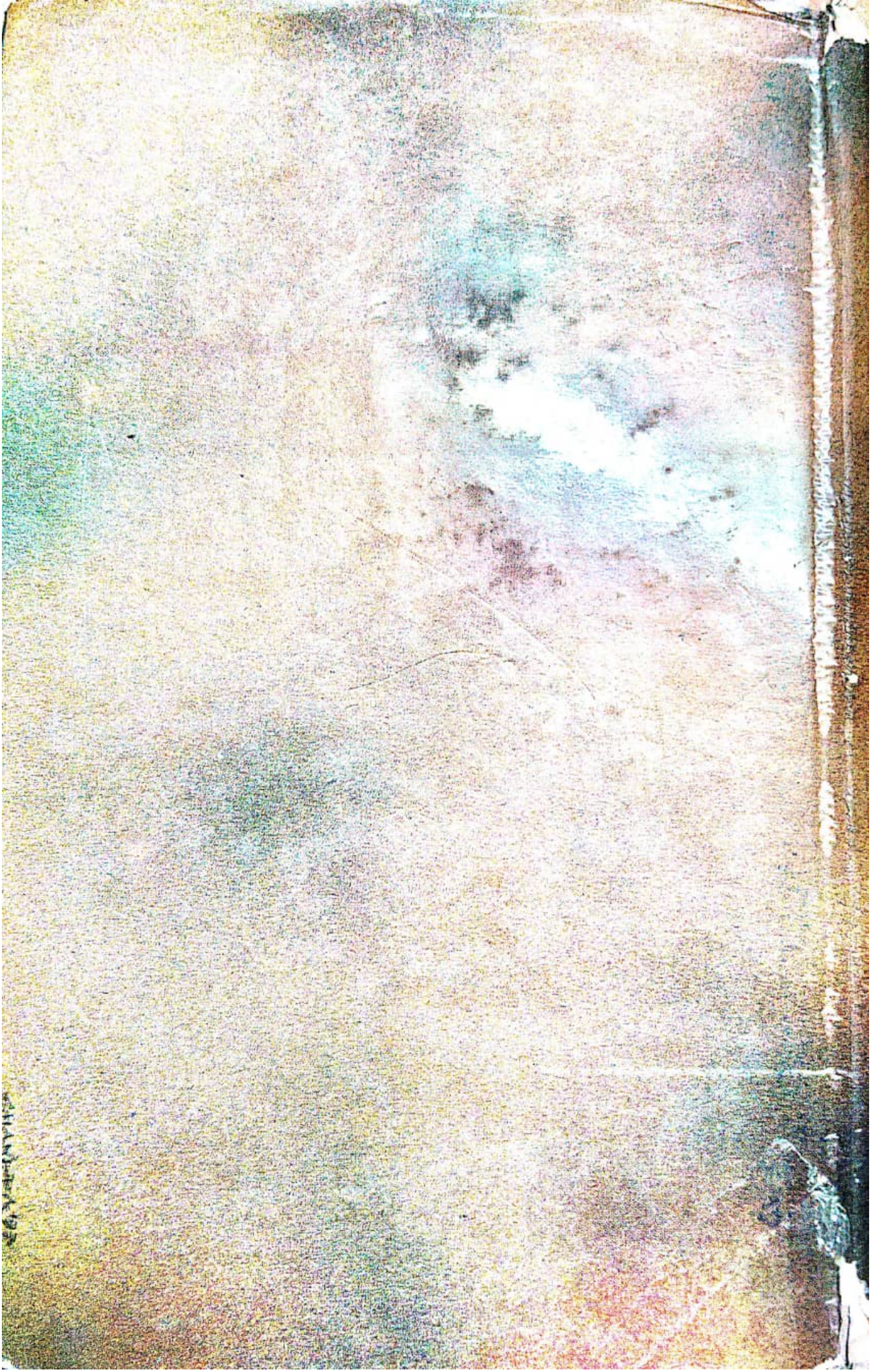

Scanned with OKEN Scanner